❋ 31 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर ही राखी पर्व शुरू होता है, जो फिर मनाया जायेगा जब भक्ति शुरू होगी, इनको कहा जाता है अनादि पर्व। वह भी कब से शुरू होता है? भक्ति मार्ग से क्योंकि सतयुग में तो यह पर्व आदि होते ही नहीं। यह होते हैं यहाँ। सब त्योहार आदि संगम पर होते हैं, वही फिर भक्ति मार्ग से शुरू होते हैं। सतयुग में कोई त्योहार होता नहीं। तुम कहेंगे दीप माला होगी ? नहीं। वह भी यहाँ मनाते हैं वहाँ नहीं होनी चाहिए। जो यहाँ मनाते हैं वह वहाँ नहीं मना सकते। यह सब कलियुग के पर्व हैं।

2] भारत को वाइसलेस बनाने से सारी दुनिया वाइसलेस हो जाती है। भारत को वर्ल्ड नहीं कहेंगे। भारत तो एक खण्ड है वर्ल्ड में बच्चे जानते हैं नई दुनिया में सिर्फ एक भारत खण्ड होता है। भारत खण्ड में जरूर मनुष्य भी रहते होंगे। भारत सचखण्ड था, सृष्टि के आदि में देवता धर्म ही था, उसको ही कहा जाता है निर्विकारी पवित्र धर्म, जिसको 5 हज़ार वर्ष हुए।

3] संगम को भी कुम्भ कहा जाता है। तीन नदियां वास्तव में हैं नहीं, गुप्त नदी पानी की कैसे हो सकती है ! बाप कहते हैं तुम्हारी यह गीता गुप्त है। तो यह समझाया जाता है तुम योगबल से विश्व की बादशाही लेते हो, इसमें नाच-तमाशा आदि कुछ भी नहीं है। वह भक्ति मार्ग पूरा आधाकल्प चलता है और यह ज्ञान चलता है एक लाइफ। फिर दो युग है ज्ञान की प्रालब्ध, ज्ञान नहीं चलता है। भक्ति तो द्वापर-कलियुग से चली आई है। ज्ञान सिफ एक ही बार मिलता है फिर उसकी प्रालब्ध 21 जन्म चलती है।

4] घर-घर में रोशनी यहाँ होने की है। वहाँ दीपमाला आदि नहीं मनाते हैं। वहाँ तो आत्माओं की ज्योत जगी हुई है। वहाँ फिर कोरोनेशन मनाया जाता है, न कि दीपमाला। जब तक आत्माओं की ज्योत नहीं जगी है तो वापिस जा नहीं सकते।

5] बाप ज्ञान का, शान्ति का सागर है। यह दो बातें हैं मुख्य। इनसे तुम शान्ति का वर्सा ले रहे हो। याद भी बड़ी सूक्ष्म है।

6] वह है परम आत्मा। परमधाम में रहते हैं इसलिए परम कहा जाता है। वह तो तुम भी रहते हो। अब नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तुम ज्ञान ले रहे हो। पास विद् ऑनर जो होते हैं उनको कहेंगे पूरा ज्ञान सागर बने हैं। बाप भी ज्ञान सागर, तुम भी ज्ञान से सागर। आत्मा कोई छोटी-बड़ी नहीं होती है। परमपिता भी कोई बड़ा नहीं होता। यह जो कहते हैं हजारों सूर्य से तेजोमय– यह सब हैं गपोड़े। बुद्धि में जिस रूप से याद करते हैं वह साक्षात्कार हो जाता है। इसमें समझ चाहिए। आत्मा का साक्षात्कार वा परमात्मा का साक्षात्कार, बात एक हो जायेगी। बाप ने रियलाइज़ कराया है– मैं ही पतित-पावन, ज्ञान का सागर हूँ। समय पर आकर सबकी सद्गति करता हूँ। सबसे जास्ती भक्ति तुमने की है फिर बाप तुमको ही पढ़ाते हैं।

7] जैसे कोई सीजन होती है तो सीजन से बचने के लिए उसी प्रमाण अटेन्शन रखा जाता है। बारिश आयेगी तो छाते, रेनकोट आदि का अटेन्शन रखेंगे। सर्दी आयेगी तो गर्म कपड़े रखेंगे..... ऐसे वर्तमान समय मन बुद्धि में निगेटिव भाव और भावना पैदा करने का विशेष कार्य माया कर रही है इसलिए विशेष सेफ्टी के साधन अपनाओ। इसका सहज साधन है– **एक प्वाइंट स्वरूप में स्थित होता। आश्चर्य और क्वेश्चनमार्क के बजाए बिन्दू लगाना अर्थात् विशेष आत्मा बनना।**

❋ 31 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ योग-

1] ज्ञान बल के साथ योग का भी बल हो तो सब कार्य आपेही करने के लिए तैयार हो जायें। योग बहुत गुप्त है इससे तुम विश्व का मालिक बनते हो। योग में रहकर समझाओ तो अखबार वाले आपेही तुम्हारा सन्देश छापेंगे।

2] इस चित्रों आदि में ज्ञान है, योग गुप्त है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, बेहद का वर्सा लेने के लिए। वह है ही गुप्त, जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो, कहाँ भी बैठ तुम याद कर सकते हो। सिर्फ यहाँ बैठकर येग नहीं साधना है। ज्ञान और याद दोनों सहज हैं।

3] तुम बच्चे भल बाहर में चक्र लगाओ, बाप को याद करो।

4] भल स्त्री सामने हो, तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। देखते हुए न देखो। हम तो अपने बाप को याद करते हैं, वह ज्ञान का सागर है।

5] खुदा को याद करो तो तुम्हारे सिर जो पाप हैं वह उतर जाएं।

❋ धारणा-

1] यहाँ भी पवित्र बनने का पुरूषार्थ करते हैं। सबसे बड़ा उत्साह तो यह है। प्रतिज्ञा करनी चाहिए– बाबा, हम पवित्र तो जरूर बनेंगे। यह उत्सह सबसे बड़ा समझना चाहिए।

2] बच्चों की बदनामी हुई अखबारों द्वारा, फिर नाम भी इन द्वारा होगा। थोड़ा पैसा दो तो अच्छा डालेंगे। अब तुम पैसे कहाँ तक देंगे। पैसे देना भी रिश्वत है। बेकायदे हो जाता। आजकल रिश्वत बिगर तो काम ही नहीं होता है। तुम भी रिश्वत दो, वो लोग भी रिश्वत दें तो दोनों एक हो जाएं। तुम्हारी बात है योगबल की। योगबल इतना चाहिए जो तुम कोई से भी काम करा सको। भूँ-भूँ करते रहना है।

3] पवित्र बनना है, देवीगुण भी धारण करना है। कोई भी अवगुण नहीं होना चाहिए। काम का भी भारी अवगुण है। बाप कहते हैं अब तुम पतित मत बनो।

5] बाप को जाना तो बस बाप और वर्से को याद करो, पवित्र बनो। दैवीगुण धारण करो। बाप और वर्सा कितना सहज है। एम ऑबजेक्ट भी सामने है।

6] 63 जन्म विकारी बनें, अब बाप कहते हैं यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो।

❋ सेवा-

1] अखबारों से ही नाम बाला होना है, इनसे ही बहुतों को सन्देश मिलेगा।

2] अखबारों द्वारा ही तुम्हाला नाम बाला होगा। अभ विचार करना है– क्या करें जो समझें। रक्षाबन्धन का अर्थ क्या है? जबकि आप आये हैं पावन बनाने, तब बाप ने बच्चों से पवित्रता की प्रतिज्ञा ली है। पतितों को पावन बनाने वाले ने राखी बांधी है।

3] सिर्फ 7 दिन का कोर्स लिया, बस। जास्ती दरकार नहीं। फिर तुम जाकर औरों को आपसमान बनाओ।

4] अब बच्चों को **विचार करना है– हम अखबार द्वारा कैसे समझायें।** त्रिमूर्ति भी देना पड़े क्योंकि समझाया जाता है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्राह्मणों को पावन बनाने बाप आया है इसलिए राखी बंधवाते हैं। पतित पावन, भारत को पावन बना रहे हैं, हर एक को पावन बनना है क्योंकि अब पावन दुनिया स्थापन होती है।

5] तो विचार करना है– रक्षा बन्धन का अखबार में कैसे डाले। वह तो ठीक है, मिनिस्टर के पास जाते हैं, राखी बांधते हैं परन्तु पवित्र तो बनते नहीं हैं। तुम कहते हो पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन हो जाए।